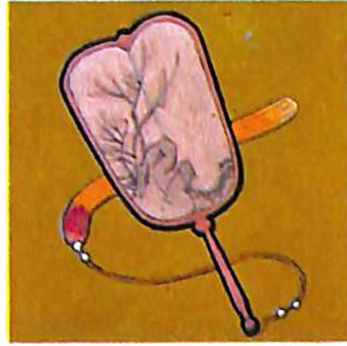
" 'ल्याम्रोचाए' सदन की विचित्र कथाएं" (५)

हुङ रवी



हुङ रवी

रूपान्तरकार: लिन इङ
चित्रकार: वाङ च्वूशङ



विदेशी भाषा प्रकाशन गृह पेइचिङ

प्रथम संस्करण   १९८४

प्रकाशक : **विदेशी भाषा प्रकाशन-गृह**
२४ पाएवानच्वाङ मार्ग, पेइचिङ
वितरक : **चीन अन्तरराष्ट्रीय पुस्तक व्यापार निगम (क्वोची शूत्येन)**
पो. आ. वाक्स ३९९, पेइचिङ
चीन लोक गणराज्य में मुद्रित



१. वहुत पुरानी वात है। फङ श्यांङरु नाम का एक गरीव स्कालर (शाही परीक्षा में उत्तीर्ण सव से निम्न स्तर का शिक्षार्थी) था। उसकी मां पहले ही चल वसी थी और वह अपने पिता के साथ दरिद्रता का जीवन व्यतीत कर रहा था। प्रतिदिन कविताएं और क्लासिकी ग्रंथ पढ़ने के अलावा वह खेतीवारी और गृहस्थी का काम भी करता था।



२. एक चांदनी रात, उसे आंगन की दीवार से एक युवती झांकती दिखाई पड़ी।



३. श्याङरु ने चौंककर पुस्तक छोड़ दी और उसे प्रणाम किया और उससे अंदर आने को कहा। वह सीढ़ी फांदकर आंगन में चली आयी। श्याङरु ने नाम पूछा। उसने निःसंकोच उत्तर दिया : "मेरा नाम हुङ य्वी है और मैं पास के गांव की रहने वाली हूं।"



४. उसके सुशील ग्राचरण ग्रौर खूबसूरती से मोहित होकर श्याङरु ने उसके सम्मुख दोस्ती का प्रस्ताव रखा। हुङ य्वी खुशी-खुशी राजी हो गयी। दोनों पौ फटने तक दिल खोलकर गपशप करते रहे।



५. उसी रात से, जब पूर्व में चांद निकलता, तो हुङ य्वी श्याङरु से जरूर मिलने आती। वह सिलाई-धुलाई के काम में श्याङरु का हाथ बटाती। इस तरह छै महीने बीत गये।



६. एक रात संयोगवश श्याङरु के पिता को अपने बेटे के कमरे से किसी युवती की आवाज सुनाई पड़ी। वे आग-बबूला हो उठे। कमरे की ओर लपके और बेटे को खूब दुत्कारा। फिर हुङ य्वी की ओर इशारा कर कहा : "तू भी बेशर्म है क्या ?"



७. हुङ य्वी सिसकती हुई श्याङरु से बोली : "क्या मां-बाप की आज्ञा और बरेखी की सिफारिश के बिना हम पति-पत्नी नहीं बन सकते ? तुम्हारे पिता जी ने मुझसे नाराजगी जाहिर की है। अब मुझे तुमसे अलग होना पड़ेगा।"



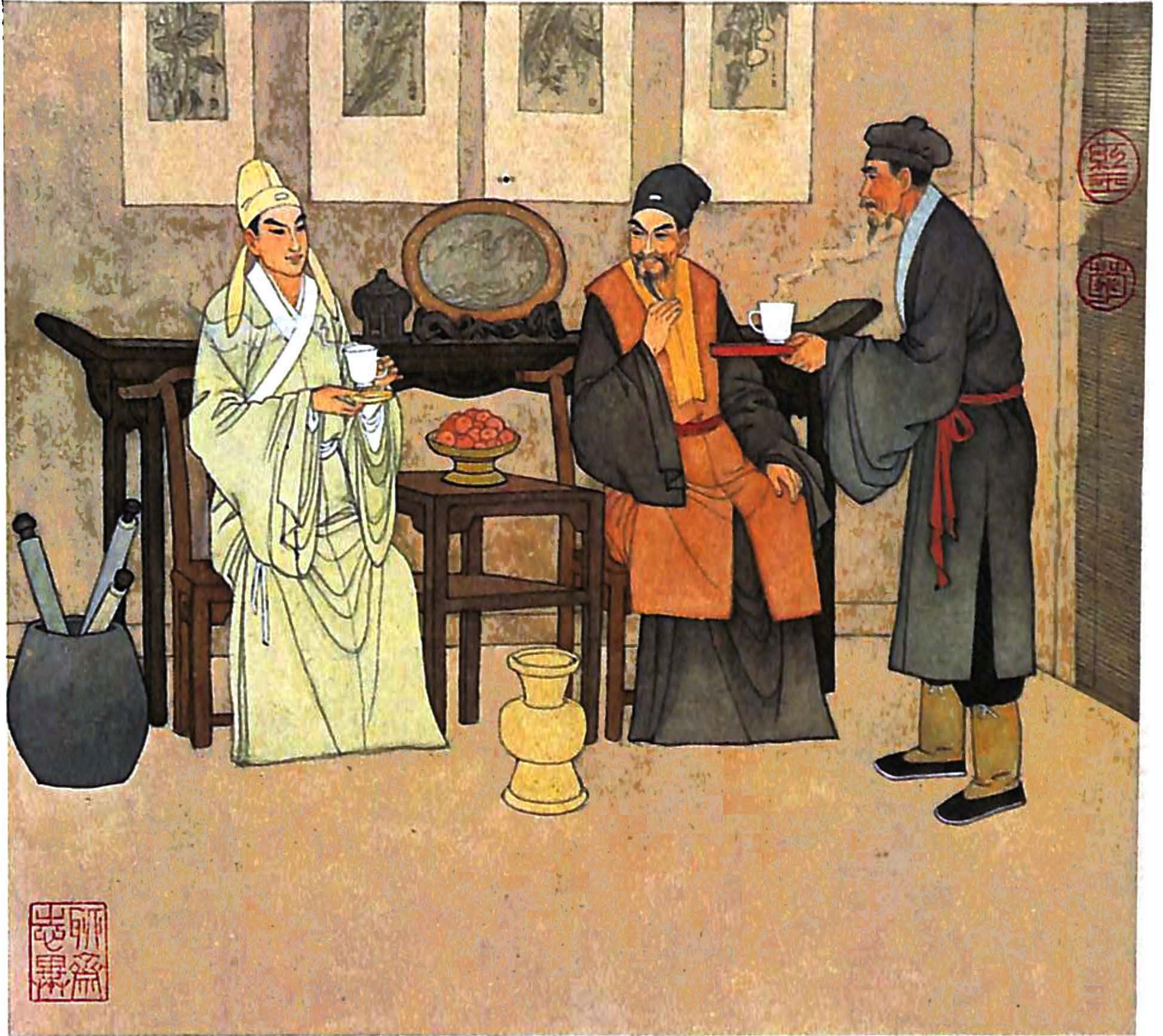
८. श्याङरु ने उसे रोकने की कोशिश की। हुङ य्वी ने कहा : "तुम्हारे पिता जी की सहमति के विना हम जिन्दगी भर एक साथ नहीं रह सकते। मैं तुम्हारा एक अच्छी लड़की से परिचय करा देती हूं। तुम जल्दी एक वरेखी भिजवाकर उससे शादी का प्रस्ताव करो।" जव श्याङरु ने अपनी दरिद्रता की कहानी सुनायी, तो उसने कहा : "कल रात मैं तुम्हें कुछ पैसे देने आऊंगी।"



९. अगली रात, हुङ य्वी ने श्याङरु को चालीस ल्याङ चांदी भेंट की और कहा : "पूर्व में तीस किलोमीटर की दूरी पर ऊछुन गांव में वेइ परिवार की अठारह वर्षीय लड़की शूइंङ एक सुन्दर लड़की है। तुम यह चांदी लेकर उससे शादी का प्रस्ताव करो। वह अवश्य सहमति जतायेगी।"



१०. कुछ समय वाद, जव श्याङरु ने देखा कि पिता का गुस्सा उतर गया है, तो सोचा क्यों न इस चांदी का लालच दिखाकर हुङ य्वी से शादी कर लूं ? लेकिन उसे हुङ य्वी का कहीं साया तक नहीं दिखाई पड़ा। एक बुढ़िया ने उससे पूछा : "वह लोमड़ी प्रेतात्मा तो नहीं है ?"



११. श्याङरु लाचार होकर हुङ ख्वी के कथनानुसार वेइ परिवार के पास आया। शूइङ के पिता ने यह देखकर कि श्याङरु एक रूपवान नौजवान है और शाही परीक्षा भी उत्तीर्ण कर चुका है, खुशी-खुशी अपनी सहमति जता दी। श्याङरु ने चांदी दी और शादी पक्की की।



१२. जव श्याङरु सास से मिलने अन्दर के कमरे में गया, तो देखा शूइङ साधारण लिवास में भी अत्यंत खूबसूरत और आकर्षक लग रही है। उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।



१३. शूइङ के पिता ने श्याङरु का सत्कार किया और उससे कहा : "तुम खुद पत्नी को मत ले जाओ। हम दहेज के साथ शूइङ को तुम्हारे पास भेजेंगे।" विवाह की तिथि तय कर श्याङरु खुशी-खुशी घर लौट आया।



१४. शादी के दिन वहुत से रिश्तेदार और दोस्त वधाई देने आये और शादी की रस्म वहुत ही धूमधाम से संपन्न हुई ।



१५. शूइङ स्वभाव की वहुत नरम थी ग्रौर काफी किफायत से गृहस्थी चलाती थी । दो साल तक सुखमय जीवन व्यतीत करने के वाद उसने एक वच्चे को जन्म दिया । इसी को कहते हैं सोने में सुहागा । वच्चे का नाम फूग्रड़ (सुखदायी लड़का) रखा गया ।



१६. एक दिन, छिङमिङ त्यौहार मनाने के लिये श्याङरु ग्रौर शूइङ अपने बेटे फूअ्रड़ को साथ वाहर ले गये। संयोग से उनकी भेंट सुन्न छाओ नाम के एक निरंकुश शरीफजादे से हो गयी। शूइङ की सुन्दरता देखकर सुन छाओ लार टपकाने लगा। उसने शूइङ पर आंखें गड़ा दीं। क्रोधित श्याङरु फौरन अपनी पत्नी और वच्चे के साथ वहां से किसी तरह वच निकला।



१७. लेकिन उस इलाके के गांव-गांव में सुन छाग्रो ने ग्रपनी चौधराहट जमा रखी थी। ग्राखिर श्याङरु वचकर जाता भी तो कहां जाता। सुन छाग्रो ने सोचा कि श्याङरु महज एक गरीव स्कालर है। मैं ज्यादा चांदी देकर उससे उसकी पत्नी शूइङ खरीद सकता हूं। ग्रत : उसने कारिन्दे को चांदी देकर श्याङरु के पास भेजा।



१८. कारिन्दे का मकसद जानकर श्याङरु आग-बबूला हो उठा। उसने चांदी जमीन पर पटक दी। श्याङरु के पिता ने भी कारिन्दे को खूब फटकार लगायी।



१६. सुन छाश्रो अपनी असफलता से बौखला उठा। उसने अपने गुर्गों को श्याङरु के परिवार पर धावा बोलने का हुक्म दिया।



२०. गुर्गों ने श्याङरु और उसके पिता की भयंकर पिटाई की और शूइङ को छीनकर अपने साथ ले गये।



२१. जब पड़ोसियों ने श्याङरु और उसके पिता को सहारा देकर जमीन से उठाया, तो तब तक सभी गुर्गे नौ दो ग्यारह हो चुके थे। श्याङरु के पिता बुरी तरह घायल हो गये थे और चन्द दिनों बाद इस दुनिया से चल बसे।



२२. शोक-विह्वल श्याङरु ने पिता का अंतिम संस्कार किया और इसके बाद काउंटी सरकार के सामने सुन छाग्रो के खिलाफ आरोप पेश किया। लेकिन सुन छाग्रो की निरंकुशता से मजिस्ट्रेट भी भयभीत था। उसने श्याङरु के इलजाम को रद्द कर दिया।



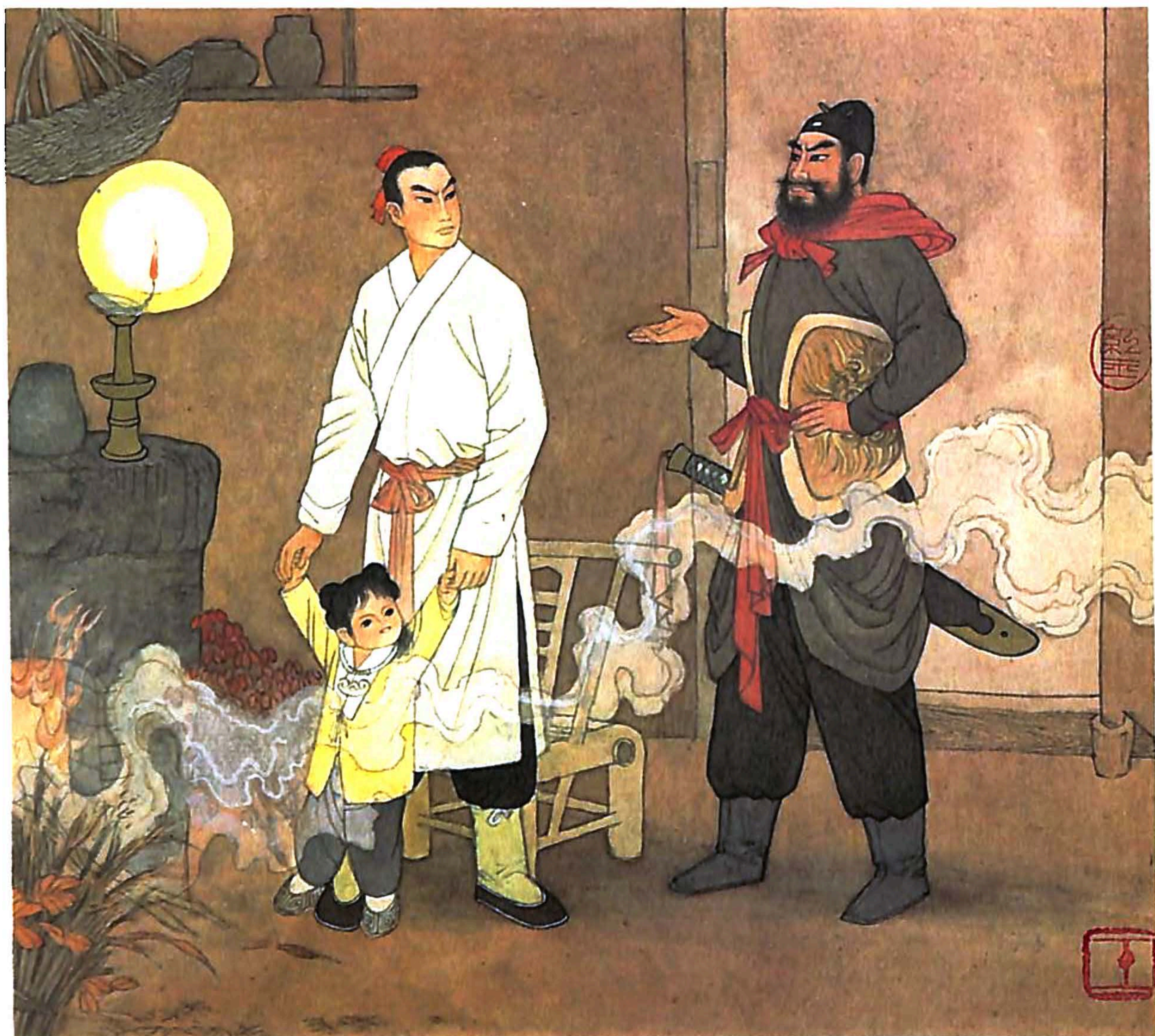
२३. शूइङ को सुन छाम्रो ने एक ऊंची इमारत में बन्द करवा दिया। एक रात, जब सुन छाम्रो कमरे के अन्दर घुस आया, तो शूइङ ने एक गुलदान उस पर दे मारा और उसे लहूलुहान कर दिया तथा स्वंय इमारत से नीचे कूदकर आत्म-हत्या कर ली।



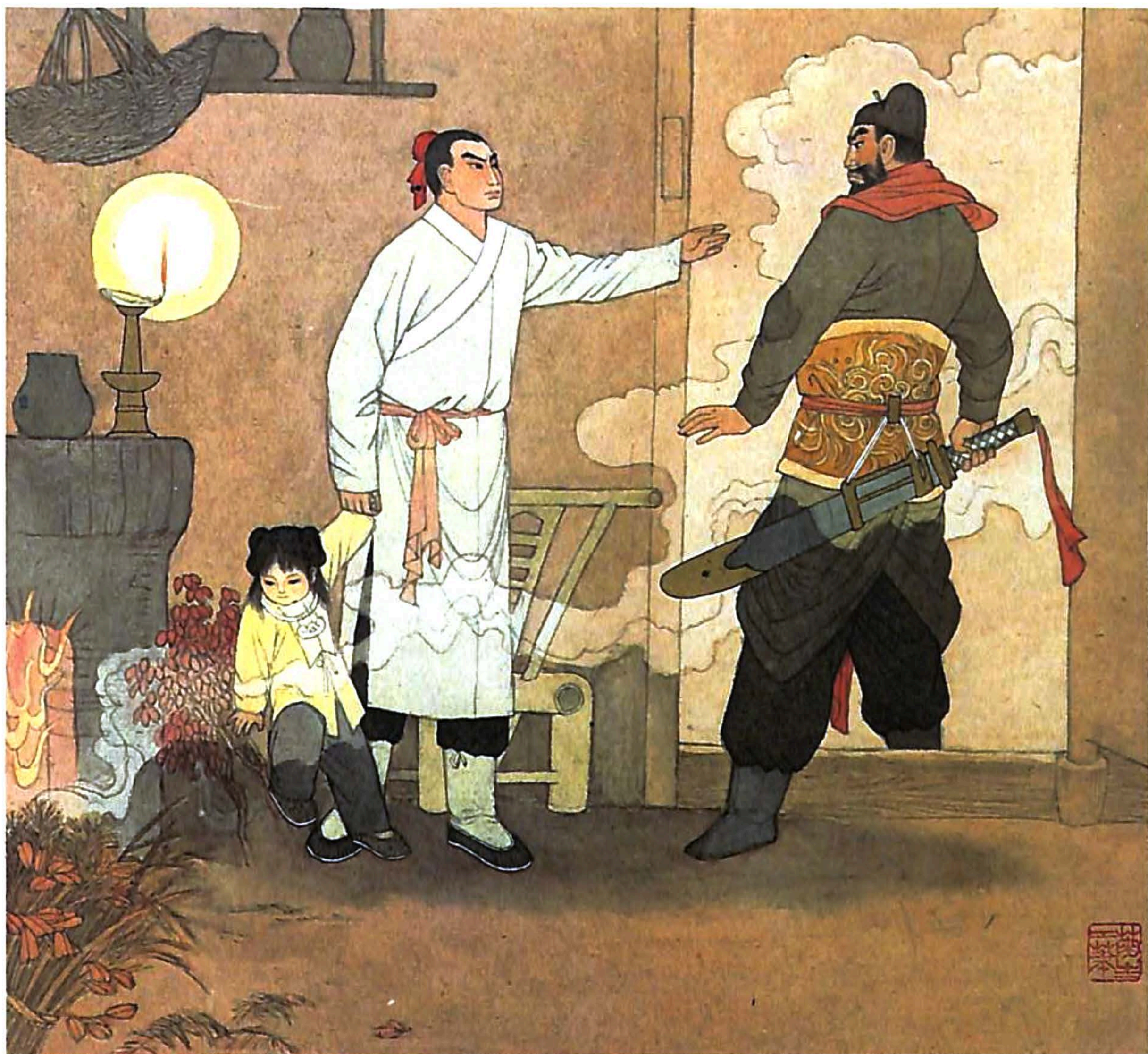
२४. शूइङ की आत्म-हत्या की खबर सुनकर श्याङरु का हृदय प्रतिशोध की आग में जलने लगा। उसने एक छुरी पैनी कर सुन छाम्रो की जान लेने की सोची। लेकिन सुन छाम्रो के गुर्गे भी तो कम न थे। उसका वध करना कोई आसान काम तो था नहीं और फिर फूग्रड़ के पालन-पोषण की भी चिन्ता थी।



२५. एक रात, अचानक एक दाढ़ी वाला हट्टा-कट्टा आदमी उसके कमरे में घुस आया। आदमी का माथा काफी चौड़ा और भौंहें बहुत घनी थीं। श्याङरु ने उसे कभी नहीं देखा था। इसलिये उसे बड़ा ताज्जुब हुआ।



२६. श्याङरु कुछ बोलने को ही था कि दाढ़ी वाले ने स्वयं सवाल कर दिया : "तुम अपने बाप और पत्नी का बदला नहीं लोगे ?" श्याङरु को शंका हुई कि कहीं यह आदमी सुन परिवार का गुप्तचर तो नहीं है, इसलिये वह टाल-मटोल करता रहा।



२७. दाढ़ीवाले की आंखों से अंगारे बरसने लगे। उसने श्याङरु को फटकारते हुए कहा : "मैंने तुम्हें एक मर्द समझा था, और तुम निकले एक डरपोक।" कह वह उलटे पांव लौटने लगा।



२८. दाढ़ी वाले की मर्मभेदी बातों ने श्याङरु के हृदय पर गहरा असर किया। उसने घुटने टेककर प्रणाम किया और कहा : "मैं इतने बड़े अपमान को कैसे चुपचाप पी सकता हूं। मगर मेरा बच्चा बहुत छोटा है। अगर आप उसके लालन-पालन के लिये राजी हो जायं, तो मैं फौरन बदला ले सकता हूं और इसके लिये अपनी जान गंवाने को भी तैयार हूं।"



२९. यह सुनकर दाढ़ीवाले का गुस्सा उतर गया। वह प्रसन्नता से बोला : "बच्चे का पालन-पोषण तो तुम्हारी ही जिम्मेदारी है। मैं तुम्हारी तरफ से वदला लूंगा।"

दाढ़ी बाबा की उदारता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिये श्याङरु ने वार-वार साष्टांग प्रणाम किया।



३०. श्याङरु ने नाम जानना चाहा, तो दाढ़ी वावा ने कहा : "कोई जरूरी नहीं कि मैं सफल ही होऊं। अगर असफल हो जाऊं, तो तुम मेरे से कोई गिला न रखना और अगर सफल हो जाऊं, तो मैं तुम से किसी प्रकार की कृतज्ञता की अपेक्षा नहीं रखता। इसलिये तुम्हें नाम वताने का क्या फायदा है?" यह कहते हुए दाढ़ी वावा लम्बे डग भरते हुए चल दिये।



३१. दाढ़ी वावा के चले जाने के वाद, इस डर से कि कहीं सुन छाम्रो का वध हो जाने के वाद उसके खिलाफ मुकदमा चल सकता है, श्याङरु बच्चे को गोद में लेकर घने पहाड़ी जंगल में भाग गया ।



३२. सुन परिवार के अहाते पर चांदनी छिटक आयी थी और लोग नींद में सो रहे थे। अचानक एक आदमी इस अहाते की ऊंची दीवारें लांघता हुआ अहाते के पिछले आंगन में चला आया। यह आदमी कोई और नहीं, दाढ़ी वावा ही थे।



३३. बाबा ने सुन छाओ को पलंग से उठा लिया और तलवार के एक ही वार से उसके सिर को धड़ से अलग कर दिया।



३८. फिर दाढ़ी बाबा तलवार लिये कमरे से बाहर आये और छत पर छलांग लगाकर अन्धकार में ओझल हो गये ।



३५. सुन परिवार के लोगों को जव इस वारदात का पता चला, तो वे भय से सिहर उठे। पूरी रात अहाते में शोर-शरावा रहा।



३६. सुबह होते ही, सुन परिवार के कारिन्दे ने काउंटी सरकार को घटना की सूचना दी। यह सुन मजिस्ट्रेट का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। उसने कारिन्दे से हत्यारे के बारे में पूछताछ की तो कारिन्दे ने जवाब दिया : "सुन और फङ दो परिवारों में आग-पानी जैसा बैर है। हत्यारा फङ श्याङरु ही होगा।"



३७. मजिस्ट्रेट ने तुरंत फङ श्याङरु को पकड़ने के लिये सिपाही भेजे। लेकिन फङ के दरवाजे पर ताला पड़ा हुआ था। श्याङरु तो कब का भाग चुका था। मजिस्ट्रेट ने सिपाहियों को जगह-जगह तलाशी कर फङ श्याङरु को गिरफ्तार करने का हुक्म दिया।



३८. दक्षिणी पहाड़ की तलाश करते-करते अचानक सिपाहियों को जंगल में किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। आवाज की दिशा में ढूंढते-ढूंढते उन्होंने पाया कि फङ श्याङरु फूअड़ को गोद में लिये बैठा है।



३६. सिपाही फौरन उस पर झपट पड़े और फूग्रड़ को जंगल में ही फेंक दिया। फूग्रड़ चीख-चीख कर रो रहा था। उसकी आवाज एक छुरी की तरह श्याङरु के दिल से गुजर रही थी।



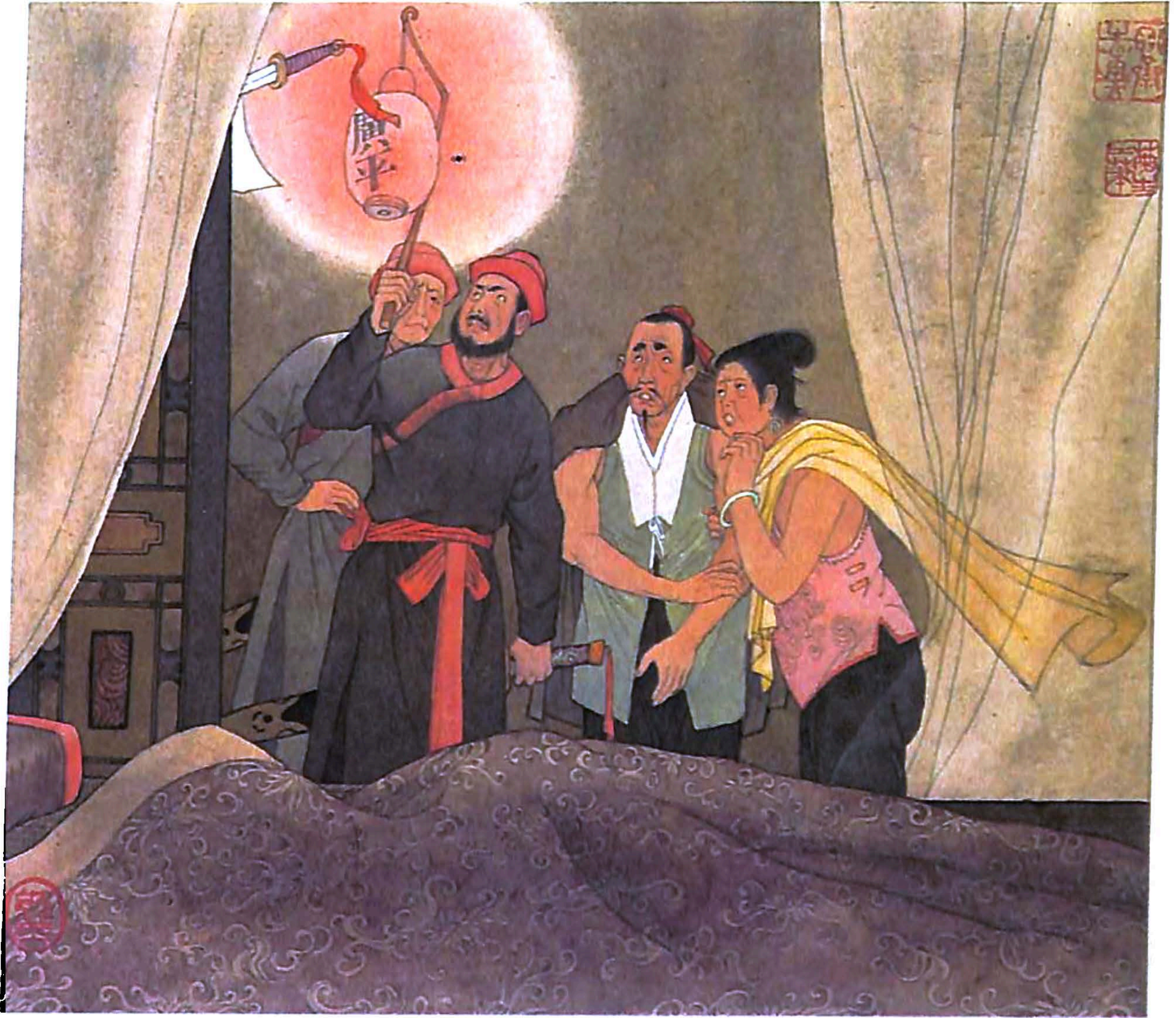
४०. मजिस्ट्रेट ने फङ श्याङरु के मामले की सुनवाई की : "तुमने क्यो सुन छाम्रो की हत्या की ?" फङ श्याङरु ने सफाई पेश की : "मेरे साथ एकदम अन्याय हो रहा है सरकार। सुन छाम्रो की हत्या रात में हुई थी और मैं इससे एक दिन पहले ही जा चुका था। एक दुधमुंहे बच्चे के साथ भला मैं दीवार लांघकर कैसे सुन छाम्रो की हत्या कर सकता हूं ?"



४१. मजिस्ट्रेट ने फिर पूछा : "अगर तुम हत्यारे नहीं हो, तो तुम अपना घर छोड़कर क्यों भाग खड़े हुए ? इस पर फङ श्याङरु निरुत्तर हो गया और उसे जेल में डाल दिया गया। वह सोचने लगा : "अगर मैं मर जाऊं तो मेरे बच्चे का क्या होगा ?" यह सोचते ही उसकी आंखों से आंसू बहने लगे।



४२. उसी रात, मजिस्ट्रेट वत्ती बुझाकर पलंग पर सोने जा रहा था। अचानक "सर्र" की आवाज के साथ एक छुरी उसके पलंग के सिरे पर घुंप गयी। डर के मारे मजिस्ट्रेट जोर-जोर से चीख उठा : "बचाओ! बचाओ!"



४३. जव नौकर वत्ती लेकर अन्दर आये, तो देखा कि छुरी के साथ एक परची भी नत्थी है, जिस पर ये शब्द लिखे हैं : "सुन छाओ का वध करनेवाला मैं हूं – दाढ़ी वाला। हत्या का फङ श्याङरु से कोई सरोकार नहीं। अगर तुम उसे नहीं छोड़ोगे, तो मैं तुम्हारा सिर भी धड़ से अलग कर दूंगा।"



४४. मजिस्ट्रेट को भयभीत होकर फङ श्याङरु को छोड़ना पड़ा। लेकिन अब फङ परिवार में अकेला श्याङरु ही बचा रह गया था। उसे निराशा ही निराशा महसूस हो रही थी।



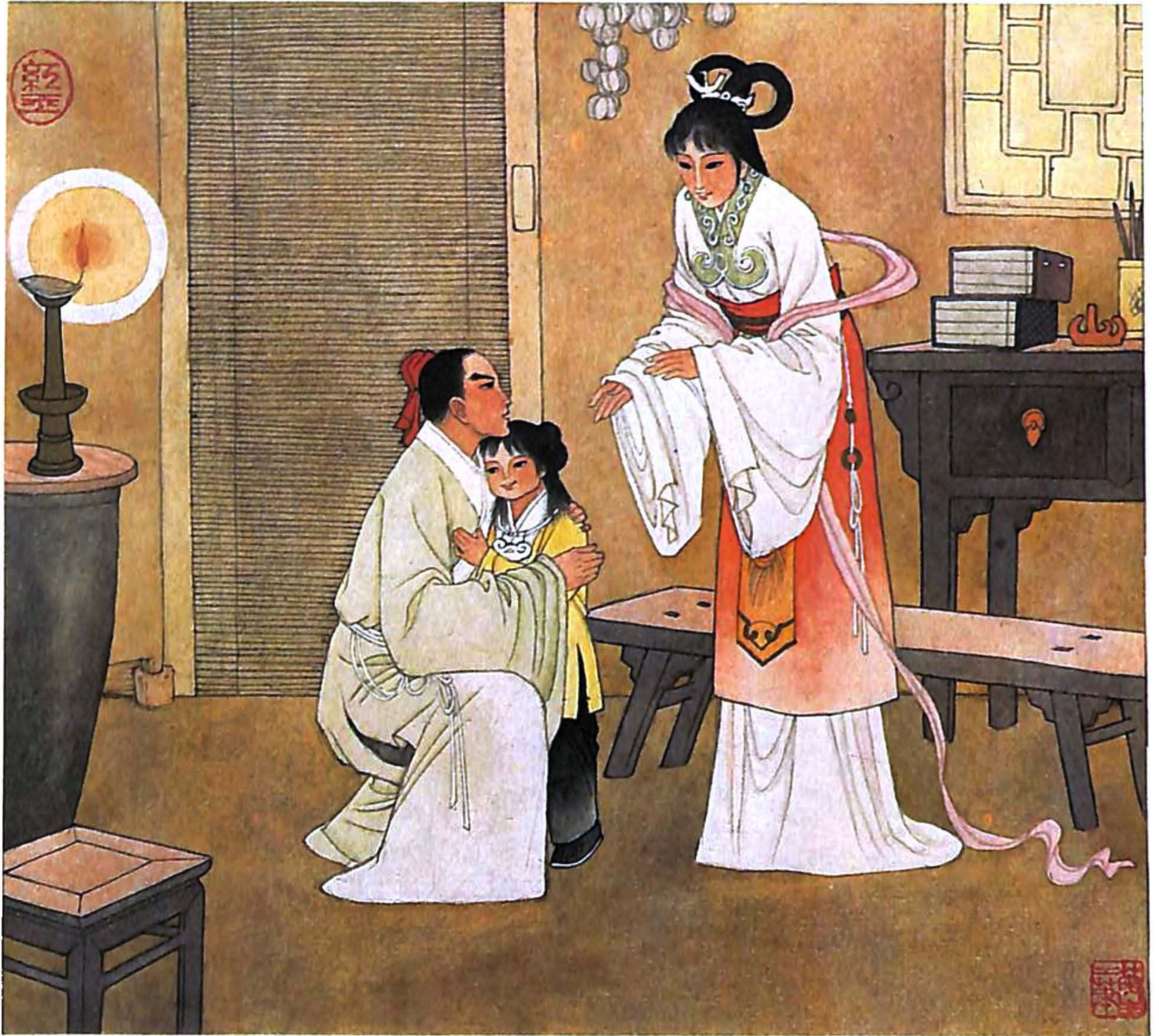
४५. एक रात, श्याङरु अपने मृत परिवारजनों और अपनी हितैषिणी हुङ य्वी की याद में खो गया, अचानक दरवाजे पर खटखट की आवाज सुनाई पड़ी। उसने गौर से सुना तो दरवाजे के बाहर किसी महिला और बच्चे की आवाज सुनाई दे रही थी।



४६. उसने फौरन दरवाजा खोला। चांद की मद्धिम रोशनी में एक महिला और एक नन्हा बच्चा दिखाई पड़े। महिला ने सवाल किया : "तुम बदला ले चुके हो, अब क्या हाल हैं तुम्हारे ?" यह जानी-पहचानी आवाज थी, पर फिर भी श्याङरु पहचान नहीं पा रहा था।



४७. अन्दर आने पर वत्ती की रोशनी में श्याङरु ने देखा कि यह तो उसकी प्रेमिका हुङ य्वी है। लम्बे बिछोह के बाद इस पुनर्मिलन से दोनों हर्ष और विषाद की मिलीजुली भावना से ओत-प्रोत फूट-फूटकर रोने लगे।



४८. थोड़ी देर वाद, हुङ य्वी ने वच्चे को बुलाया और श्याङरु के सामने करते हुए मुस्कराकर कहा : "अपने पिता जी के पास जाओ।" वच्चा श्याङरु से लिपट गया। श्याङरु ने गौर से देखा। यह उसका बेटा फूअड़ है। उसने कौतूहलवश पूछा : "यह तुम्हारे पास कैसे आया ?"



४९. तब हुङ य्वी ने कहानी बयान की। उसने कहा, वह दरअसल एक लोमड़ी प्रेतात्मा है। उस रात जब श्याङरु को नानशान पहाड़ में पकड़ लिया गया था, तो वह वहां से गुजर रही थी। फूअड़ को रोता देख उसने उसे अपने पास रख लिया। उसने यह भी बताया कि दाढ़ी वाला आदमी उसका बड़ा भाई है। अब चूंकि मुसीबत गुजर चुकी है, इसलिये वह फूअड़ को अपने पिता के पास पहुंचाने आयी है।



५०. यह सुनकर श्याङरु का हृदय कृतज्ञता और प्रेम की भावना मे द्रवित हो उठा। रात गहराती जा रही थी। फूग्रड़ शान्ति से सो गया था। लेकिन श्याङरु और हुङ य्वी रात भर वातचीत करते रहे। गपशप का दौर खत्म ही नहीं हो रहा था।



५१. पौ फटने को थी, हुङ ख्वी हड़बड़ाकर उठ बैठी और कहा : "अब मुझे जाना है।" श्याङरु ने उससे हमेशा साथ रहने की प्रार्थना की। तभी फूअड़ जाग गया। उसने उसकी आस्तीन पकड़ उसे रोकने की कोशिश की।



५२. हुङ य्वी श्याङरु के सच्चे प्रेम से भाव-विह्वल हो उठी। हंसती हुई बोली : "यह हमारे लिये एक नयी गृह-स्थी का निर्माण करने का सुनहरा मौका है। भला मैं तुम्हें छोड़कर कैसे जा सकती हूं।"



५३. हुङ य्वी ने श्याङरु को कुछ जेवरात दिये और उन्हें बेचकर कुछ कृषि-औजार और एक करघा खरीदने को कहा। उस दिन से वे दोनों दिन भर खेतों में काम करते थे और रात को हुङ य्वी करघे पर कताई करती थी। उनकी जिन्दगी खुशहाल होती चली गयी। हुङ य्वी के कौशल और शिष्टाचार को पड़ोसियों की भूरि-भूरि प्रशंसा मिली।



५४. कुछ ही दिनों बाद उन्होंने अपनी कमाई से जमीन और नया मकान खरीदा और मेहनती और सुखमय जीवन बिताने लगे।

प्रसिद्ध चीनी क्लासिकी कथासंग्रह
"'ल्याओचाए' सदन की विचित्र कथाएं"
से रूपान्तरित

१. पाए छ्यूल्येन
२. आपाओ
३. लाओशान पर्वत का ताओ ऋषि
४. देवद्वीप
५. हुङ्य्वी



यह अठारहवीं शताब्दी के " 'ल्याओचाए' सदन की विचित्र कथाएं" नामक प्रसिद्ध क्लासिकी कथासंग्रह में से "हुङ य्वी" नामक कथा का चित्रकथा रूपान्तरण है।

हुङ य्वी एक लोमड़ी प्रेतात्मा थी। उसका फङ श्याङरु नाम के एक गरीब स्कालर से प्रेम हो गया। फङ के पिता की असहमति से उसे बिछोह झेलना पड़ा। जाने से पहले उसने श्याङरु को वेइ परिवार की लड़की शूइङ से शादी करने में मदद दी। बाद में एक निरंकुश शरीफजादे की वजह से विवश होकर शूइङ को आत्म-हत्या करनी पड़ी और श्याङरु का परिवार छिन्न-भिन्न हो गया। एक दढ़ियल सूरमा ने निरंकुश शरीफजादे का वध कर और भ्रष्ट सरकारी अफसर को सजा देकर फङ श्याङरु का बदला लिया। अंत में हुङ य्वी और श्याङरु का पुनर्मिलन हो गया। इस कथा में एक न्यायप्रिय और नेकदिल महिला का चित्रण है।